□□□□□□□□ □□□□□□

जनसत्ता 27 जून, 2014 : देश परविर्तन के दौर से गुजर रहा है। परविर्तन के बारे में भवषि्यवाणी नहीं की जा सकती। मगर परविर्तन का आश्वासन देने वाले उसकी □क तस्वीर अपने मन में बना लेते हैं और उसे मनचाहे ढंग से परोसते रहते हैं। परविर्तन का आश्वासन कई बार घो□ा नचाने की तरह होता है। जब तक वह नाचता है, तब तक साईस को लगता है कि घो□ा उसके इशारे पर चल रहा है। नाच देखने वाले भी आनंद लेते रहते हैं। जहां घो□ा अलफ हुआ, साईस तो तरबतर होता ही है, तमाशबीन भी तति्तर-बति्तर हो जाते हैं। मोदीजी परविर्तन और वकिास के घो□े को नचाते हु□ प्रधानमंत्री के पद पर आसीन हो ग□ □ यह देश के लि□ भी ब□ा अनुभव है। यह सरकार न□ अंदाज के साथ आई है।

अभी प्रधानमंत्री ने भूटान यात्रा की। वहां से लौट कर उन्होंने कहा कि वह उनके लि□ यादगार यात्रा है। ऐसे उनके सैक□ों यात्रा□ं होंगी। यह पहला अवसर था जब उन्होंने कसिी देश की संयुक्त संसद को संबोधति किया। वहां की परंपरा के वपिरीत अपने भाषण पर सांसदों से तालयिां बजवा लीं। वहां तालयिां बुरी आत्माओं को भगाने के लि□ बजाई जाती हैं, लेकनि सांसदों ने अपनी बुरी परंपरा को □क वशि्ववव्यापी परंपरा में बदल कर अच्छी परंपरा बना दयिा। आशा है, वे इस परंपरा को आगे भी चालू रखेंगे।

इसी दौरान दो बातें हुईं। □क तो प्रधानमंत्री का यह कहना कि हिंदुस्तान का मजबूत होना छोटे देशों की सुरक्षा के लि□ आवश्यक है। यह बात मेरे कानों को उसी तरह अखरी जैसे चैनलों पर आने वाले कार के □क वज्ञिापन में पीछे बैठा पति पुत्र से पूछता है कि □क्सीलरेटर पर पांव पहुंच रहा है या नहीं। वह उसे नागवार गुजरता है। जब वह ड्राइवर की सीट पर बैठा कार चला रहा है तो दूसरा व्यक्ति, भले वह उससे ब□ा हो, उसे कद में अपने से छोटा होने का अहसास कैसे करा सकता है। नेहरू से लेकर इंदरिा गांधी के शासन तक प□ोसी देश इस बात से बहुत नाराज थे कि हिंदुस्तान का व्यवहार उनके साथ बगि ब्रदर जैसा है। कोई छोटा देश हो या ब□ा, सबका कद अंतरराष्ट्रीय स्तर पर समान है। नेहरू के संदर्भ में इंडोनेशयिा के तत्कालीन राष्ट्रपति सुकर्ण ने इस बात का संकेत भी दयिा था। मोदीजी ने उन्हें छोटा देश कह कर आहत तो नहीं किया? जब ब□े देशों में हमें गरीब देश कहा जाता है तो अच्छा नहीं लगता। बताते हैं कि □क बार संयुक्त राष्ट्र में भाषण देने जाते समय नक्सिन ने इंदराजी को वाशगिटन आने के लि□ नमिंत्रण दयिा, तो उन्होंने उसे यह कह कर टाल दयिा था कि यह मेरे □जेंडे पर नहीं है। इस तरह के व्यवहार से प□ोसी देश नाराज होते हैं।

दूसरी बात हमारे रक्षामंत्री की सरहद दौरे से संबंधति है। वे नयिंत्रण रेखा का नरीक्षिण करने ग□ थे। युद्धपोत वक्रिमादत्यि को देश को समर्पति करने के सलिसलिे में मीडयिा ने प्रधानमंत्री को सागर पोत का कमांडर बताया था, उसी दनि रक्षामंत्री नयिंत्रण रेखा के दौरे पर ग□ थे। वहां जाकर उन्होंने सेना के प्रबंधन के प्रति अपनी संतुष्टि प्रकट की। इससे जरूर सेना का मनोबल ब□ा होगा। लेकनि शपथ ग्रहण समारोह में आमंत्रति पाकसि्तान के प्रधानमंत्री को हमारे प्रधानमंत्री द्वारा बातचीत के जरि□ समस्याओं का हल नकिलने के आश्वासन के बरक्स रक्षामंत्री ने कहा कि जब तक आतंकी हमले नहीं रोके जा□ंगे, तब तक पाकसि्तान से कोई बात नहीं होगी। यह बात प्रधानमंत्री के आश्वासन के उलट है।

हालांकि उनके इस वक्तव्य के बाद 17 जून के कुछ अखबारों में छपा है कि पाकसि्तान और हिंदुस्तान की व्यावसायकि मुद्दों पर सचवि स्तर की जल्दी बात होगी। रक्षामंत्री ही वति्तमंत्री भी हैं। व्यावसायकि मुद्दों पर बातचीत वति्त मंत्रालय के अधीन होगी। लगता है कि वति्त मंत्रालय और रक्षा मंत्रालय की बात अलग-अलग कोणों से कही गई है। व्यक्ति □क हो सकता है, पर मंत्रालयों का नजरयिा अलग हो जाता है। इस बार मोदीजी ने मंत्रालय के बंटवारे में प्रयोग कि□ हैं। यह उनका वशिेषाधकिार है। उस पर प्रश्नचहि्न लगाना ठीक नहीं, मगर चर्चा हो सकती है।

एक के बाद एक कई समस्याएं सामने आ गई। सबसे पहली गांठ तो केंद्रीय रसायन राज्यमंत्री निहाल चंद के ऊपर लगे बलात्कार के आरोप की है। मोदी ने राष्ट्रपति के भाषण पर अपना उत्तर देते हुए दागी सांसदों के बारे में कहा था कि एक साल के अंदर लंबित मुकदमे तय किए जाएं, जो निर्दोष हों वे बने रहें, जो दागी साबित हों जेल जाएं।

इस बात से लोगों को लगा था मोदी संसद में दिए गए आश्वासन पर जरूर अमल करेंगे। पर रसायनमंत्री ने गाड़ी अटका दी। राजस्थान के, भाजपा सरकार के मंत्री राठौड़ साहब उन्हें निर्दोष बता रहे हैं। अब तो पूरी पार्टी समर्थन में आ गई है। पीड़ित महिला ने अपने सम्मान की बाजी लगा कर पुनर्विचार याचिका दायर की है। क्या वह झूठ बोल रही है? अगर बोल भी रही है तो पार्टी मोदीजी के संसद में दिए गए आश्वासन का सम्मान तो करे।

रसायनमंत्री संसद का टिकट पाते समय कथित दागी रहे होंगे। जहां इतने तथाकथित अन्य दागी प्रत्याशियों को टिकट मिले, वहां उनको भी मिल गया। पर मंत्री को समन मिलना, वह भी बलात्कार के मामले में, नाजुक बात है। प्रधानमंत्री चुप हैं। भाजपा उन्हें बने रहने के लिए कह रही है। आधी आबादी के सम्मान का सवाल है। वे उन्हें कह सकते हैं कि फिलहाल त्यागपत्र दे दो, जब पाक-साफ होकर आओगे तो हम राज्यमंत्री तो क्या, पूरा मंत्री बना देंगे। महिलाओं को इस बात से सम्मान भी मिलेगा और आश्वासन भी, कि प्रधानमंत्री महिलाओं के सम्मान के प्रति गंभीर हैं। वरना सरकारों का स्थायी जवाब होता है कि जब तक कोई दोषी साबित नहीं हो जाता, उसे दंडित नहीं किया जा सकता। यही भाजपा कह रही है। खैर, यह निर्णय तो प्रधानमंत्री के अधिकार क्षेत्र में आता है।

दूसरा संकट महंगाई का है। प्रधानमंत्री और उनके सहयोगी महंगाई के सवाल से जूझ रहे हैं, क्योंकि अच्छे दिन आने वाले हैं का नारा इसी बात को लेकर दिया गया था। लेकिन अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियां कह रही हैं कि पता नहीं अच्छे दिनों के लिए कितना इंतजार करना पड़े। अच्छे या बुरे दिन सरकारों के हाथ में नहीं होते। उसके लिए बहुत से तत्त्व जिम्मेदार होते हैं। कांग्रेस के बुरे दिन मोदी के अच्छे दिन में बदल गए। जनता के दिन वर्तमान हालात में बुरे दिन ही न होकर रह जाएं। चैनलों ने तो अभी से नारे में अच्छे दिन शब्द को काट कर महंगे दिन कर दिया।

इराक का शिया-सुन्नी झगड़ा और सुन्नियों का इतना आक्रामक होते जाना कि हुकूमत को निष्क्रिय बना कर देश के बहुत बड़े हिस्से पर अपनी हुकूमत कायम कर लेना, दूसरे देशों की आर्थिक स्थिति बदल रहा है। इराक पेट्रोल का बड़ा पूर्तिकर्ता देश है। हिंदुस्तान के लिए दूसरे नंबर का पूर्तिकर्ता है। वहां के सबसे बड़े शोधक कारखाने के पचहत्तर प्रतिशत हिस्से पर विद्रोहियों ने कब्जा कर लिया था। अंतरराष्ट्रीय बाजार में कच्चे तेल के दाम भी बढ़ गए। पेट्रोल और डीजल के दाम अगर बढ़ते हैं तो हिंदुस्तान में महंगाई बढ़ेगी। दूसरी समस्या चालीस भारतीयों को अगवा करके अज्ञात स्थान पर रखा गया है। टीवी चैनल रात-दिन दिखा रहे हैं कि उनके संबंधी रो-रोकर बेहाल हैं। उनका वापस आना देश की शांति से जुड़ा है।

शिया-सुन्नी का मतांतर लखनऊ के दोनों वर्गों को प्रभावित कर रहा है। सरकार आश्वासन दे रही है कि वह हर कोशिश कर रही है उन्हें सही-सलामत वापस लाने की। अभी तक पता नहीं कि वे कहां रखे गए हैं। पता भी चल गया तो क्या करेंगे। यही नहीं, तीस छात्र भी फंसे हैं। दरअसल, चालीस लोग अगवा कर लिए गए तो दबाव बढ़ना स्वाभाविक था। लेकिन जो लगभग अठारह हजार लोग वहां से आना चाहते हैं उन्हें लाने के बारे में सरकार की कोई योजना नहीं है।

सरकार हर क्षेत्र में सबसिडी वापस लेने की बात कह रही है। रेलमंत्री ने रेल किराया 14.2 प्रतिशत बढ़ा दिया। उनका कहना है कि पहली सरकार का प्रस्ताव था, उसे लागू किया गया है। यह सरकार अगर पहली सरकार के मंसूबों को बिना नुक्ता हटाए क्रियान्वित कर रही है, तो फिर नई सरकार की मौलिकता कहां रही। वैसे पहली सरकार ने कभी इतना किराया नहीं बढ़ाया। यह सरकार तो उनके प्रस्ताव में दो प्रतिशत भी कम करने को तैयार नहीं हुई। ये सब

स्थतियां अच्छे दनि लाने में रुकावट पैदा कर सक्ती है□

इस बीच मुसलमि देशों के साथ हमारे पहले जैसे संबंध नहीं है□ नहीं तो मत्रि मुसलमि देशों के माध्यम से वहां फंसे लोगों को वापस लाने की कोशशि की जा सक्ती थी□ मोदीजी के बारे में माना जाता है वे मंसूबों को व्यावहारकि जामा पहनाने में माहरि हैं, पर जब बात दूसरे देशों की हो तो वह महारत कतिनी कामयाब होगी, कहना मुश्कलि है□

मैंने गृहमंत्री के व्यक्तगित सचवि की नयिुक्त ि का मामला फेसबुक पर डाला था□ कसिी सज्जन ने, जो संभवत: मोदी-भक्त हैं, लखिा कि कारदिों के साथ यही होता है□ अब तो कार्मकि मंत्रालय से आदेश जारी हो गया कि कोई मंत्री पहली सरकार के मंत्रयिों के साथ रहे कर्मयिों में से कसिी को अपने यहां नहीं रखेगा, सब नर्णिय प्रधानमंत्री करेंगे□ राज्यपालों पर तो गाज गरि ही रही है, छोटे अफसर और बाबू लोग नफरत के लपेटे में आ जा□ंगे, यह उम्मीद नहीं थी□

सुना है, गृहमंत्री ने प्रधानमंत्री से अपनी व्यथा कही है□ कानूनमंत्री के साथ भी ऐसा ही हुआ□ उन्होंने वक्तव्य दयिा कि हर मंत्री को अपने नर्णिय लेने का अधकिार है□ उपरोक्त आदेश के बाद न गृहमंत्री की व्यथा का मतलब है, न कानूनमंत्री के वक्तव्य का□ ये सब बातें नई सरकार के संचालन में कहां तक सहायक हो सक्ती हैं, कहना मुश्कलि है□ सवाल इस बात से भी जु□ा है कि प्रधानमंत्री ने यूपी□ कार्यकाल के कैबनिेट सचवि को छह महीने का सेवा वस्तिार दे दयिा, जबकि पहली सरकार उन्हें दो साल का वस्तिार दे चुकी थी□ इससे पता चलता है कि वे उस सरकार के कतिने नकि ट थे□ यह नीतयिों के दोहरेपन की तरफ इशारा करता है□ इतने ऊंचे स्तर पर तो और भी अधकि□ प्रधानमंत्री का घो□ा नाचेगा, तो क्या मंत्रयिों को टट्टुओं पर संतोष करना प□ेगा!

फेसबुक पेज को लाइक करने के ल□ क्लकि करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्वटिर पेज पर फॉलो करने के ल□ क्लकि करें- https://twitter.com/Jansatta